16 फीसदी अमेरिकी शिक्षक डार्विन को नहीं मानते

हाल में किए गए एक सर्वेक्षण से यह तथ्य उजागर हुआ है कि अमेरिका में 16 प्रतिशत हाई स्कूल शिक्षक डार्विन के सिद्धांत को सही नहीं मानते हैं। उनका मानना है कि ईश्वर ने इंसान की रचना पिछले दस हज़ार साल के अंदर की है।

अमेरिकी अदालतों ने बार-बार यह फैसला दिया है कि सृष्टिवाद और बुद्धिमान रचना के सिद्धांत धर्म के हिस्से हैं। ये विज्ञान नहीं हैं और विज्ञान की कक्षाओं में इनका कोई स्थान नहीं है। इसके बावजूद कई सारे शिक्षक अपनी कक्षाओं में पढ़ाते हैं कि सृष्टिवाद जीवन के विकास की एक वैकल्पिक व वैज्ञानिक व्याख्या है।

पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक माइकल बर्कमैन जानना चाहते थे कि शिक्षक अपनी कक्षाओं में जैव विकास को किस तरह से पढ़ाते हैं। अतः उन्होंने इसका एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण किया।

सर्वेक्षण में करीब 2000 हाई स्कूल शिक्षकों के मत आमंत्रित किए गए थे। इन शिक्षकों को बेतरतीब ढंग से चुना गया था। इनमें से 939 ने जवाब दिए। जवाब देने वाले शिक्षकों में से 2 प्रतिशत ने तो कहा कि वे जैव विकास पढ़ाते ही नहीं। वैसे अधिकांश शिक्षकों ने बताया कि वे इस विषय पर 3 से लेकर 10 कालखंड व्यतीत करते हैं।

इसके अलावा, करीब 25 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि वे जैव विकास पढ़ाते समय कुछ समय तो सृष्टिवाद को ज़रूर देते हैं। और इनमें से भी कुल आधे शिक्षकों का मत था कि वे सृष्टिवाद को एक वैध, वैज्ञानिक सिद्धांत की तरह पढ़ाते हैं।

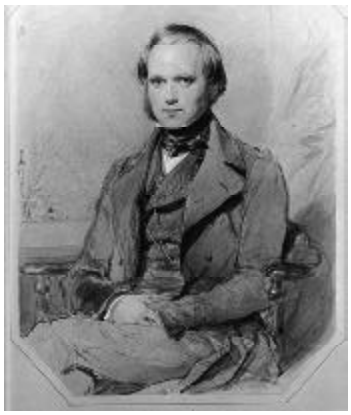

जब शिक्षकों से उनके निजी विश्वास के बारे में पूछा गया तो 16 प्रतिशत ने कहा कि वे मानते हैं कि इंसान की रचना ईश्वर ने पिछले 10,000 वर्षों में की है। ऐसे शिक्षक अपनी कक्षा में सृष्टिवाद को ज़्यादा समय भी देते हैं।

वैसे सर्वेक्षण से एक बात यह उभरी कि जिन शिक्षकों ने विज्ञान में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, वे जैव विकास सिद्धांत पढ़ाने के लिए ज़्यादा समय देते हैं। हो सकता है कि अच्छी तैयारी हो, तो शिक्षकों में ज़्यादा आत्मविश्वास रहता है कि वे बच्चों के सवालों को संभाल पाएंगे। खास तौर से अमरीका में यह एक संवेदनशील विषय है और बच्चे तरह-तरह के सवाल पूछते हैं। इसलिए बर्कमैन का सुझाव है कि सारे शिक्षकों के लिए विकास का कोर्स करवाया जाना चाहिए।

यह देखना रोचक होगा कि भारत के स्कूलों में ऐसे विषयों की पढ़ाई का क्या आलम रहता है। हमारे यहां प्रायः इस तरह के अध्ययन किए ही नहीं जाते कि शिक्षक पाठ्य पुस्तकों में दिए गए विषयों अथवा उनके प्रस्तुतीकरण के बारे में क्या विचार रखते हैं। यदि ऐसे अध्ययन किए जाएं तो शायद शिक्षा की गुणवत्ता पर सकारात्मक असर पड़ेगा।

(स्रोत फीचर्स)